CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

समक्ष ... मालिकों को चतावनी दी कि यदि वे खान के श्रमिकों के लिए बस्ती बसान की योजना कार्यान्वित नहीं करते तो हम मजबूर होकर कानूनी कार्यवाहियां करनी पड़ेंगी।

आपन कहा कि मालिकों को श्रमिकों की हाल की चुप्पी से बहक नहीं जाना चाहिए क्योंकि यह स्थायी शांति नहीं है। श्रमिकों में आज भी गम्भीर असन्तोष

... प्रकट क्यों किया। तथा आम धारणा के विपरीत उन्होंने क्यों कहा कि समस्त प्रस्ताव अन्तिम रूप से अस्वीकृत कर दिये गये हैं। उनका विचार है कि संयुक्त राष्ट्र संघ की असेम्बली में काश्मीर सम्बन्धी विचार-विनिमय के समय भारत का तर्कहीन प्रदर्शित कर राजनीतिक वातावरण से लाभ उठाने का लियाकत ने यह प्रयत्न किया

कलि विडम्बनम
46

शक्कर उद्योग के श्रमिकों से हड़ताल न करने की सरकारी अपील

लखनऊ, १८ जनवरी। कल एक प्रेस नोट द्वारा उत्तरप्रदेश की सरकार ने शक्कर उद्योग के श्रमिकों से अपील की कि वे इस समय हड़ताल करने की भावना का त्याग कर दें।

प्रेस नोट में सरकार ने श्रमिकों को आश्वासन दिया है कि मजदूरों के १९४९-५० वर्ष की बोनस की मांग सरकार ने निर्णयार्थ भेज दी है।

सरकार ने यह भी चेतावनी दी कि शक्कर का उद्योग राज्य का एक मात्र प्रमुख उद्योग है; इसपर अवांछनीय दबाव नहीं डाला जाना चाहिये। अन्य राज्यों के शक्कर उद्योग के मुकाबले यदि हमारे राज्य के शक्कर उद्योग पर अनुचित दबाव डालने की चेष्टा दर्शायी जायगी तो सरकार शक्कर उद्योग को स्थानान्तरित कर न सकेगी ... जिसका परिणाम श्रमिकों पर भयंकर ...

दोनों दलों ने स्पष्टीकरण किया ... दूसरे दिन श्री नजीब ने प्रतिरोध का भंग करने के उपाय के रूप में राष्ट्रमण्डलीय विशेषतया न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया की सेनाएं काश्मीर में नियुक्त करने का प्रस्ताव किया था। इस प्रस्ताव के प्रति भारतीय प्रतिक्रिया ... हुई कि भारतीय जनमत किसी विदेशी सेना को भारतीय भूमि पर आने देना सहन नहीं करेगा। इसके अतिरिक्त, ऐसी कार्यवाही से विश्व के वर्तमान तनाव के वातावरण में काश्मीर जैसे सैनिक महत्व के स्थान में विदेशी सेना की नियुक्ति का अर्थ वहां पाश्चात्य सैनिक अड्डे की स्थापना ... सकता है। इस आपत्ति का ... हुए प्रधान मन्त्रियों ने ... काफी नीचे उ... स्वीकार करना नहीं चाहा। ... विशेष जो... द्वारा ... वातावरण ... पाकिस्तानी ... अनिश्चित स... बनाने ... चांदी ...

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नास्य चोरा न पिशुना न दायादा न पार्थिवाः ॥ दैन्यं राज्यादपि ज्यायो यदि तत्त्वं विबुध्यते ॥ ५७ ॥

टीका—जो आदमी दीनतारक्खेतो इस दीनता वस्तुके चोर कोई नैहें चुगलखोर नैहें हिस्सा बटानेवाले भाई बंद नैहे इसको राजाभी नै छीन सकताहे तासें भाई दैन्य राज्यसेभी बडी चीज हे क्योंकि राज्यलेनेके वास्ते ये चारोंजने उद्युक्त रहतेहें इसमें वेभी बांटा नै चाहतेहें तासें जो तत्त्वज्ञान होयतो दैन्यही रखना ॥ ५७ ॥

प्रकाशयत्यहंकारं प्रवर्तयति तस्करान् ॥ सर्वत्यागेन येषां च लक्ष्मीः किंचिदुपस्थिता ॥ ५८ ॥

टीका—अब धनिक लोगोंका हाल कहतेहें कि लक्ष्मी पास आई ओर गर्व आया ओर चोर लोकभी लक्ष्मी जहां होतीहे वहां अवश्य जातेहें ॥ ५८ ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

विडम्बयन्ति ये नित्यं विदग्धा धनिनो जनान् ॥ त एव विडम्ब्यन्ते श्रिया किंचिदुपस्थिताः ॥ ५९ ॥

टीका–जो चतुर आदमी धनिक पुरुषनमें गर्वादिक देखके उनकी हँसी करतेहैं उन लोकनके पासभी जब लक्ष्मी आतीहै तब ऐसीही दशा होतीहै ॥ ५९ ॥

प्रामाण्यबुद्धिः स्तोत्रेषु देवताबुद्धिरात्मनि ॥ कीटबुद्धिर्मनुष्येषु नूतनायाः श्रियः फलम् ६०॥

टीका–जब पहलेई पहले संपत्ति पुष्कल मिलजायतो मनुष्यकी ये दशा होने लगतीहै कि जो अपनी झूंठी झूंठी बडाई कोई करे तो सच्ची मालूम देनेलगे और अपने शरीरकोभी एक तरहका देवता माननेलगे और आदमीको भुनगा समझने लगे ये दशा नवीन लक्ष्मीकी प्राप्ति समयमें होतीहै ॥ ६० ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

शृण्वन्त एव पृच्छन्ति पश्यन्तोपि न जानते॥
विडम्बनानि धनिकाः स्तोत्राणीत्येव म-
न्वते ॥ ६१ ॥

टीका—धनिक पुरुष सुनतेहैं तोभी पूछतेहैं कि क्या कही अर्थात् धनमदसें ये भान इस्तरहकी बोलीमें नहीं रहता कि ये क्या बोलतेहैं और दूसरे आदमीको देखें तोभी नहीं पहिचानतेहैं दूसरा कोई उनकी बिड-म्बन करे अर्थात् ऊपरसें मुँह चुपडी बात करेतो उसको अपनी स्तुति समझतेहैं ॥ ६१ ॥

आवृत्य श्रीमदेनान्धानन्योन्यकृतसंविदः ॥
स्वैरं वसन्ति पार्श्वस्था बालोन्मत्तपिशाच-
वत् ॥ ६२ ॥

टीका—जो कि लक्ष्मीमदसे अन्धेहैं उनके पासके आदमी बाल उन्मत्त पिशाचकेसीतरह उनको आवरण करके रहतेहैं ॥ ६२ ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

स्तोतव्यैः स्तूयते नित्यं सेवनीयैः सुसेव्यते ॥
न बिभेति न जिह्रेति तथापि धनिको जनः ६३

टीका—अनेक रीतिसें धनिक मनुष्यकी स्तुति करीजातीहै तथा अनेक पदार्थ खाने पीने पहरने ओढनेको मिलतेहैं तोभी उसको भय कोई तरहका नहीं होताहै कि आज तो मेरेपास लक्ष्मीहै कलको न भई तो क्या करूंगा तथा उसको लाजभी कोई जातकी नहीं रहतीहै ॥ ६३ ॥

क्षणमात्रं ग्रहावेशो याममात्रः सुरामदः ॥
लक्ष्मीमदस्तु मूर्खाणामादेहमनुवर्तते ॥ ६४ ॥

टीका—क्षणभर भूत प्रेतका आवेश रहताहै और प्रहर भर मद्यका नशा रहताहै पर धनका मदतो मूर्खोंको हमेशा रहताहै ॥ ६४ ॥

श्रीर्मासमर्धमासं वा चेष्टित्वा विनिवर्तते ॥
विकारस्तु सदा लब्धो नित्यो लशुनगन्धवत् ॥ ६५॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

टीका—धन महीना दोमहीना रहके अर्थात् थोडे काल रहके चला जाताहै पर उसका विकार हमेशा रहताहै जैसेकि लहसन स्थानसे चलागया होवे तोभी उस जगे वास रहताहै तद्वत् ॥ ६५ ॥

कण्ठे मदः कोद्रवजो हृदि ताम्बूलजो मदः ॥
लक्ष्मीमदस्तु सर्वाङ्गे पुत्रदारमुखेष्वपि ॥६६॥

टीका--कंठमें कोदोंका मद रहताहै और हृदयमें ताम्बूलका मद रहताहै और लक्ष्मीका मद स्त्री पुत्र सबके मुखपर रहताहै ॥ ६६ ॥

यत्रासीदस्ति वा लक्ष्मीस्तत्रोन्मादः प्रवर्तताम् ॥ कुलेप्यवतरत्येव कुष्ठापस्मारवत्कथम् ॥ ६७ ॥

टीका—जहां लक्ष्मी थी वा है वहां उसका मद होय तो वाजबी है परये धनमद कोढी कलंकी कितनाहीं अगाडीकी संतानमेंभी चलेहै बडे अचंभेकी बातहै॥६७॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अध्यापयन्ति शास्त्राणि तृणीकुर्वन्ति पण्डितान् ॥ विस्मारयन्ति जातिं स्वां वराटाः पञ्चषाः करे ॥ ६८ ॥

टीका–जो पांचकौडी हाथमें होयँ तो आदमी समझताहै शास्त्र पढना क्या मुशकिलहै और पंडितभी क्या चीजहैं और अपनी जातमेंभी ख्याल नहीं करताहै ६८॥

बिभर्तु भूयान्धनिको दत्तां वा देयमर्थिषु ॥ यावद्याचकसाधर्म्यं तावल्लोकोन मृष्यति।६९॥

टीका–धनिक लोक भले धनकों पास धर रक्खें वा दान करें पर उनमें जबतक दैन्यादिहै तबतक लोक आदर न देंगे ॥ ६९ ॥

धनभारस्तु लोकानां पिशुनेनैव धार्यते ॥ कथं ते तल्लघूकर्तुं यतन्ते परतः स्वतः ॥ ७० ॥

टीका–अब चुगल लोगोंकी निन्दा करतेहैं कि जो

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

धनका भारहै उसको चुगल लोग धारण करतेहैं तासे बडेनको उतारने सकतेहैं ॥ ७० ॥

समानरूपं पिशुने किमुपक्रियते नरैः ॥ द्विगु-
णं त्रिगुणं चैव कृतान्तो लालयिष्यति ॥ ७१ ॥

टीका--जिसने भले आदमीके संग बुराई करी होगी उसके समानरूप अर्थात् बदलेमें भला आदमी क्या बुराई करेगा परन्तु उसका फल तो दुगुना तिगुना खलको परलोकमें फल बहुतेरा यमराज देदेंगे ॥ ७१ ॥

गोकर्णे भद्रकर्णे च जपो दुष्कर्मनाशनः ॥
राजकर्णे जपः सद्यः सर्वकर्मविनाशनः ॥ ७२ ॥

टीका--गोकर्णनामक शिवक्षेत्रमें तथा भद्रकर्णमें जो जप किया होय तो सब खोटे कर्मनको दूर करताहै और कानमें जो चुगल करतेहैं वो तो सर्व कर्मके नाश कहैं ॥ ७२ ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

न स्वार्थं किंचिदिच्छन्ति न प्रेर्यन्ते च केन-
चित् ॥ परार्थेषु प्रवर्तन्ते खलाः संतश्च तुल्य-
वत् ॥ ७३ ॥

टीका--अब खल पुरुषकी निन्दा करतेहैं कि न अपना कुछ मतलब बनता देखतेहैं न कोई उनको प्रेरणा करताहै किंतु अपने आप क्या स्वाभीष्टमें प्रवृत्त होतेहैं तासें खल और सज्जन ऐसे हैं ॥ ७३ ॥

कालान्तरे ह्यनर्थाय गृध्रो गेहोपरि स्थितः ॥
खलो गृहसमीपस्थः सद्योनर्थाय देहिनाम्॥७४॥

टीका--जो घरपे गीध बैठे तो कालान्तरमें उसका दुष्फल मिलताहै और खल आदमी मोहल्लामेंभी रहता होयतो झटही बिगाड करताहै ॥ ७४ ॥

शुष्कोपवासो धर्मेषु भैषज्येषु च लङ्घनम् ॥
जपयज्ञश्च यज्ञेषु रोचते लोभशालिने ॥ ७५ ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

टीका–अब लोभीकी निन्दा करतेहैं कि लोभी आदमीको धर्म करनेमें उपवास बताओ तो अच्छेलगें और ओषधीमें लंघन अच्छे लगें और यज्ञमें जप अच्छा लगताहै ॥ ७५ ॥

किं वक्ष्यन्तीति धनिका यावदुद्विजते मनः॥ किं
प्रेक्ष्यतीति लुब्धोपि तावदुद्विजते ततः ॥ ७६ ॥

टीका–जैसे द्रव्यवान् पुरुष याचकको देखके विचारताहै कि ये क्या कहेगा तैसे लोभी भी आदमीको देखके विचारताहै कि ये क्या देखताहै ॥ ७६ ॥

सर्वमातिथ्यशास्त्रार्थं साक्षात्कुर्वन्तिलोभिनः ॥
भिक्षाकवलमेकैकं ये हि पश्यन्ति मेरुवत् ॥७७॥

टीक--जो लोभी एकेक भीखके कोरको सुमेरु सरीखे देखतेहैं वो जाके आतिथ्य शास्त्रको सत्कार करतेहैं अर्थात् देनेसे क्या फायदा होताहै इत्यादि पूछतेहैं तब देतेहैं ॥ ७७ ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

धनपालः पिशाचो हि दत्ते स्वामिन्युपस्थिते ॥ धनलुब्धः पिशाचो हि न कस्मै च न दित्सते ॥ ७८ ॥

टीका—धनपाल जो है अर्थात् धनकी रक्षा करनेवाला रोकडियारूपी जो पिशाचहै अर्थात् कुबेर है वो मालिक आवे तो धन देवे और धनलुब्धरूपी पिशाच तो किसीको नहीं देताहै ॥ ७८ ॥

दातारोर्थिभिरर्थ्यन्ते दातृभिः पुनरर्थिनः ॥
कर्तृकर्मव्यतीहारादहो निम्नोन्नतं कियत् ७९॥

टीका—दातालोकसे याचक धन मांगतेहैं और दातालोक याचकनसे पुत्रादिक मांगतेहैं तो देखिये कितनी ऊंची नीची बातहै ॥ ७९ ॥

स्वस्मिन्नसति नार्थस्य रक्षकः संभवेदिति ॥
निश्चित्यैवं स्वयमपि भुङ्क्ते लुब्धः कथंचन ८०॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

टीका—हमारे पीछे कौंन धंनकी रक्षाकरेगा ये विचारके लोभी आपभी बडे कष्टसे खातेहैं ॥ ८० ॥

प्रस्थास्यमानः प्रविशेत्प्रतिष्ठेति दिनेदिने ॥
विचित्रानुल्लिखेद्विघ्नांस्तिष्ठासुरतिथिश्चिरम् ८१

टीका—जो आपको रहना होय जिनके घर उनसे नित्त जानेका बहाना बनायाकरे फिर वो लोग मनवारसे रखें तब रहे तो अतिथिकी प्रतिष्ठा बढतीहै और हमेशा कह्या करे कि देखो तुम्हारे कहेसे हम रहगएहैं पर हमारा यह नुकशान हुआ ॥ ८१ ॥

प्रदीयते विदुष्येकं कवौ दश नते शतम् ॥
सहस्रं दाम्भिके लोके श्रोत्रिये तु न किंचन८२॥

टीका—विद्वान्को एकगुना देतेहैं और कविको दशगुना देतेहैं नम्र आदमीको सौ गुनादेतेहैं ढोंगीको हजारगुना देतेहैं और वेद पढनेवालेको कुछ नहीं देतेहैं ॥८२॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

घटकं सम्यगाराध्य वैराग्यं परमं वदेत् ॥
तावदर्थाः प्रसिध्यन्ति यावच्चापलमावृतम् ८३॥

टीका—घटक अर्थात् मिलाऊ आदमीसें मिलके वैराग्यकी तारीफ करनी और जहाँतक अर्थ प्रसिद्ध होतेहैं तबतक चपलता छिपायके रक्खे ॥ ८३ ॥

एकतः सर्वशास्त्राणि तुलसीकाष्ठमेकतः ॥
वक्तव्यं किंचिदत्युक्तं वस्तुतस्तुलसी वरा ॥८४॥

टीका—एकतरफ सब शास्त्रहैं और एकतरफ तुलसीकाष्ठहै अर्थात् सब शास्त्रमें तुलसीकी तारीफ करीहै तासे चाहे जित्ती तुलसीकी अतिशयोक्ति स्तुति करो सिद्धान्त चीज सब उत्तमहै ॥ ८४ ॥

विस्मृतं वा हठेनेदं तुलस्याः पठता गुणान् ॥
विश्वसंमोहिनी वित्तदायिनीति गुणद्वयम् ८५॥

टीका—तुलसीकी सब जगे तारीफ लिखी है और बडे गुण लिखेहैं पर विश्वको मोहन करनेवालीहै तथा

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

द्रव्यको देनेवालीहै ये और कहना चाहिये ॥ ८५ ॥

कौपीनं भसितालेपो दर्भा रुद्राक्षमालिकाः ॥
मौनमेकाशिका चेति मूर्खसंजीवनानि षट् ८६॥

टीका—कौपीन पहरना तथा भस्म खूब लगानी कुश रखने रुद्राक्षमाला रखनी मौन रहना एक बेर खानेका नियम रखना ये मूर्खोंको जीनेके उपायहैं॥ ८६ ॥

वासः पुण्येषु तीर्थेषु प्रसिद्धश्च मृतो गुरुः ॥
अध्यापना वृत्तयश्च कीर्तनीया धनार्थिभिः८७॥

टीका—जिनको धन लेनेकी चाह होय उनको उत्तम तीर्थमें वास करना चाहिये और जो प्रसिद्ध आदमी मरगया होय उसको गुरु बताना पढानेका धंदा बताना चाहिये ॥ ८७ ॥

मन्त्रभ्रंशे संप्रदायः प्रयोगश्च्युतसंस्कृतौ ॥
देशधर्मस्त्वनाचारे पृच्छतां सिद्धमुत्तरम् ॥८८॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

टीका–मन्त्र चूक गए होंय और कोईने रोका होय तो कहना ऐसाही संप्रदायहै बोलनेका और कहीं संस्कृत बोलने में स्खलित भया होयतो कहना ऐसाभी प्रयोग होताहै अनाचार होयतो कहना देशाचर ऐसाहीहै ऐसे सिद्ध उत्तर देना ॥ ८८ ॥

यथा जानन्ति बहवो यथा वक्ष्यन्ति दातरि ॥
यथाधर्मं चरेत्सर्वं न मृषा धर्ममाचरेत् ॥ ८९ ॥

टीका–जैसे सबलोगोंको खबर पडे दातासे जायके येलोग कहैं कि फलाना धर्मिष्ठहै तैसे तैसे दिखानेको धर्म करे ॥ ८९ ॥

सदा जपवटा हस्ते मध्येमध्येक्षिमीलनम् ॥
सर्वं ब्रह्मेति वादश्च सद्यः प्रत्ययहेतवः ॥ ९० ॥

टीका–हमेशा हाथमें गोमुखी रहनी तथा बीचबीचमें आंख बंदकरलेनी सर्वं ब्रह्मरूपहै ऐसे बोलना ये तीनों चीज जल्दी विश्वासकारकहैं ॥ ९० ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

आमध्याह्नं नदीवासः समाजे देवतार्चनम् ॥
सततं शुचिवेषश्चेत्येतद्दम्भस्य लक्षणम् ॥९१॥

टीका—दुपहरतक नदीपै वास करना तथा जहाँ बहुत आदमी जुडे होयँ वहां देवपूजन करना हमेशा धुए धुंआए शुद्ध कपडे पहरने ये दम्भका लक्षण है ॥९१॥

तावद्दीर्घं नित्यकर्म यावत्स्याद्द्रष्टृमेलनम् ॥
तावत्संक्षिप्यते सर्वं यावद्द्रष्टा न विद्यते ॥९२॥

टीका—तबतक खूब लंबा चौडा बढायके नित्यकर्म करना जबतक कोई देखनेवाला होय और देखनेवाला नहोय तब झटपूरा करदेना ॥ ९२ ॥

आनन्दबाष्परोमाञ्चौ यस्य स्वेच्छावशंवदौ ॥
किं तस्य साधनैरन्यैः किंकराःसर्वपार्थिवाः९३॥

टीका—जिसके आनन्दके आंसू तथा आनन्द रोमांच ये वशमें होंय अर्थात् जब चाहे तब आंसूले आवे रोमांच करले उसके राजातो चाकर समझने॥९३॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

दण्ड्यमाना विकुर्वन्ति लाल्यमानास्ततस्तराम् ॥ दुर्जनानामऽतो न्याय्यं दूरादेव विसर्जनम् ॥ १४ ॥

टीका—जो दुर्जननको दंड देवे तो वे वक्त पै खुन्नस रक्खैं और उनसे स्नेह राखो तो उस्सेभी जियादह रक्खें तासे उनकातो दूरसेही दर्शन करना ॥ १४ ॥

अदानमीषद्दानं च किंचित्कोपाय दुर्धियाम् ॥ संपूर्णदानं प्रकृतिर्विरामे वद कारणम् ॥ १५ ॥

टीका—नहीं दान करना वा अल्पदान ये खोटी बुद्धिवालेनको क्रोपकेवास्ते होताहै और संपूर्ण दानतो उनकी प्रकृति हैं कि मेरे ये सब धन ले लेगा ये नहीं जानतेहैं ॥ १५ ॥

ज्यायानसंस्तवोदुष्टैरीष्यायै संस्तवः किल ॥
अपत्यसंबन्धविधिस्त्वनर्थायैव केवलम् ॥१६॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

टीका–दुष्टनसे परिचय न होना ये बडी उमदा बातहै और परिचय होय तो उसमेंसे ईर्ष्याई पैदा होतीहै और जो उनसे कहीं बेटा बेटी ब्याहनेका संबंध किया होय तो बडे झगडे दुःख फायदा होतेहैं ॥ १६ ॥

जातेयं ज्ञानहीनत्वं पिशुनत्वं दरिद्रता ॥ मिलन्ति यदि चत्वारि तद्दिशेऽपि नमोनमः ॥१७॥

टीका–एकतो अपने स्वजातीय और फिर वे ज्ञानहीन होंय और चुगलीखोर होंय और दरिद्री होंय अर्थात् ये चारों गुण जहां इकट्ठे हुए होंय उस दिशाकोही दण्डवत करना ॥ १७ ॥

परच्छिद्रेषु हृदयं परवार्तासु च श्रवः ॥ परमर्मणि वाचं च खलानामसृजद्विधिः ॥ १८ ॥

टीका–पराए दोष रखनेके वास्ते विश्वकर्त्ताने दुष्टोंका हृदय बनायाहै दूसरेकी बात सुननेके वास्ते कर्ण

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

बनाएहैं पराएकी मर्मच्छेदकी बात कहनेके वास्ते वाणी दीनीहै ॥ ९८ ॥

विषेण पुच्छलग्नेन वृश्चिकः प्राणिनामिव ॥
कलिना दशमांशेन कालः सर्वोपि दारुणः ९९॥

टीका—वृश्चिक अर्थात् बीछू बडा भयंकर लगताहै किस्से कि उसके पुच्छमें अर्थात् डंकमें विष लग रहाहै तात्पर्य यह कि इस कलिकालकातो अभी दशवाँ हिस्साहै इतनेहीमें यह बडा दारुण (भयंकर) लगताहै ॥ ९९ ॥

यत्र भार्यागिरो वेदा यत्र धर्मोर्थसाधनम् ॥
यत्र स्वप्रतिमानं च तस्मै श्रीकलये नमः १००

टीका—जिसइस कालियुगमें लुगाई की जो वाणीहैं वेही वेद हैं धन कमाना यही बडा धर्महै और अपने आपे कोई बडा मानतेहैं उस कलियुगको नमस्कार करतेहैं ॥ १०० ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

काममस्तु जगत्सर्वं कालस्यास्य वशंवदम् ॥
कलिकालप्रसन्नानां कालः किं नः करि-
ष्यति ॥ १०१ ॥

टीका—सब जगत भले कालके गालमें जावो पर हम लोग कलिरूपी कलाओंपर प्रसन्नहैं तो हमारा वो काल क्या करेगा ॥ १०१ ॥

कविना नीलकण्ठेन कलेरेतद्विडम्बनम् ॥
रचितं विदुषां प्रीत्यै राजस्थानानुमोदनम् १०२

टीका—ये नीलकंठनामक कविने कलिकी फजीती कहीहै उस्से विद्वज्जन प्रसन्न होंयगे तथा राजस्थानमें बडा उस्से हर्ष होगा ॥ १०२ ॥

इति श्रीमद्भारद्वाजकुलजलधिकौस्तुभनीलक-
ण्ठमतस्थापनाचार्यचतुरधिकशतप्रबन्धनिर्वाहा-
दिकमहाव्रतयाजिश्रीमदप्पय्यदीक्षितसोदरचारु-

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

दीक्षितपौत्रेण नारायणदीक्षितात्मजेनभूमिदेविगर्भसंभवेन श्रीनीलकण्ठदीक्षितेन कविना विरचितं कलिविडम्बनं समाप्तम् ।

एवं मयाद्रिनिगमाङ्कमृगाङ्कमानेसद्वत्सरेऽशुचिदलेचशुचेः शुभेह्नि ॥ व्यक्तंक्कचित्क्कचनकर्कशभावबन्धमेतद्व्यवारि शतकंविशदैः पदार्थैः ॥ १ ॥ मथुरावास्तव्यभट्टरमेशशास्त्रितनुजन्मानन्दकिशोरशर्मा ॥

दोहा–खेमराजजीश्रेष्ठिश्री–कृष्णदासके जात ।
तिनकेयंत्रालयछपी, भईजगतविख्यात ॥ १ ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

श्रीः ।

कलिप्रभावः ।

न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजना जनो मिथ्यावादी विरलतनुवृष्टिर्जलधरः ॥ प्रसङ्गो नीचानामवनिपतयो दुष्टमनसो जना भ्रष्टा नष्टा अहह कलिकालः प्रभवति ॥ १ ॥

टीका–अहह ! बडे खेदकी बातहै, जो कि, इस, कलियुगमें देवताओंमें देवपणा नहींहै गोसांई, बैरागी ब्रह्मचारी,संन्यासीआदिक तपस्वी कहानेवाले लोग छल कपट करनेमें चतुर रहतेहैं और प्रायः लोग असत्य भाषण करतेहैं. मेघ थोडी थोडी समय कुसमयमें अल्प वृष्टि करतेहैं. नीच जुवारी, धूर्त खल, व्यसनी आदिक लोगोंसे संगति होतीहै. राजालोग दुष्टअंतः करणकेअर्थात्

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

किधरसें कर बढायके पैसा मिलातेहैं, परंतु प्रजाकूं दुःख होताहै, इन्होंका योग्य रक्षण होताहै या नहीं इस बातमें विचार नहीं करते हैं. लोग धर्मसें भ्रष्ट होते हैं. नाश पावते हैं. अर्थात् कंगाल होजाते हैं. अहह ! यह कलिकालका प्रभाव है ॥ १ ॥

श्रुतिर्भ्रष्टा नष्टा स्मृतिरपि पुराणं विगलितं गता लोपं सर्वे प्रचुरतरवेदान्तनिवहाः ।। इदानीं नामैका कबिरवचनान्मोक्षपदवी न जाने को हेतुः शिवशिव कलेरेष महिमा ॥ २ ॥

टीका–वेद तो भ्रष्ट होगए, अर्थात् म्लेच्छ चांडालादिकभी पढ़नेलगे. धर्मशास्त्ररूपी स्मृतियां नाश होगई अर्थात् उन्में कहेहुये धर्म आचारसे सब लोग दूर होने लगे, पुराणभी शिथिल होगये, अर्थात् किसीकीभी पुराण सुननेकी श्रद्धा रही नहीं. और बहुतसे वेदांत-

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

शास्त्रोंके समूह लोप होगए. अब तो इस सांप्रतकालमें एक कबीरके वचनसें मुक्ति मिलने लगी है. हम नहीं जानते हैं कि, इसमें क्या कारण होगा. हरहर! सच्ची हम निश्चय करतेहैं कि, यह इतनीभी बात होनी इस कलिकालकी महिमा है. ॥ २ ॥

निर्वीर्या पृथिवी निरोषधिरसा नीचा महत्त्वं गता भूपाला निजकर्मधर्मरहिता विप्राःकुमार्गे रताः ॥ भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्राः पितुर्द्वेषिणो हा कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्यानराः सज्जनाः ॥ ३ ॥

टीका—पृथिवीमें कुछ सार नहीं रहताहै, ओषधि तथा रसभी नहीं रहतेहैं राजे लोग अपना काम प्रजाका न्यायसे रक्षण करना, और धर्मकी वृद्धि करना इससे रहित होतेहैं. ब्राह्मणलोग कुमार्गमें चलते हैं. स्त्रीलोग

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अपने पतियोंसे द्वेष करतीहैं, और अन्य जारमें प्रीति रखती हैं. पुत्र अपने पितासे द्वेष करतेहैं. अहह ! ऐसे इस विकराल कालिकालमें वे धन्य सज्जनलोग बडे कष्टसे अपनी जीविका करतेहैं. ऐसा इस कलियुगमें सर्वही कष्टहै. ॥ ३ ॥

सीदन्ति सन्तो विलसन्त्यसन्तः पुत्रा म्रि-
यन्ते जनकश्चिरायुः ॥ परेषु मैत्री स्वजनेषु
वैरं पश्यन्तु लोकाः कलिकौतुकानि ॥ ४ ॥

टीका—सज्जनलोग कष्ट पावते हैं. और दुर्जन लोग तौ बडी खुशीमें रहते हैं. पुत्र मरजातेहैं. और वृद्ध मा बाप बहुतकालतक जीतेहैं. दूसरेके साथ तौ मित्रता करते हैं. और अपने घरके आदमियोंके साथ द्वेष करते हैं. हे लोगहो ! यह कलियुगके अद्भुत चमत्कार कैसे विपरीत हैं सो देखो ॥ ४ ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कुशलाः शब्दवार्तायां वृत्तिहीनासु रागिणः ॥
कलौ वेदान्तिनो भान्ति फाल्गुने बालका इव ॥ ५ ॥

टीका—मुखसे शब्द निकालके वार्ता झोकनेमें प्रवीण और व्यर्थ अद्भुतबातोंमें वा दुर्वृत्त स्त्रियोंमें प्रीति रखनेवाले, ऐसे इस कलियुगमें वेदान्ती लोग जैसे फाल्गुनमहीनेमें छोकरालोग यथेच्छ बातें कहते हैं, और चाहिये वैसा आचरण करते हैं तैसे यथेच्छ आचरण करतेहैं ॥ ५ ॥

सन्तः क्वाऽपिन सन्ति सन्ति यदि वा दुःखेन जीवन्ति ते विद्वांसोऽपि न सन्ति सन्ति यदि वा मात्सर्ययुक्ताश्च ते ॥ राजानोऽपि न सन्ति सन्ति यदि वा तृष्णाधनग्राहिणो दातारोऽपि न सन्ति सन्ति यदि वा सेवाऽनुकूलाः कलौ ॥ ६ ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

टीका–इस कलियुगमें साधुलोग तौ बहुतकरके हैं हीं नहीं, जो कदाचित वे साधुलोग होवेंभी, तौ वे उपजीविका बडे कष्टसे करतेहैं, और विद्वान्लोगभी बहुतकरके नहीं हैं. जो कभी वे विद्वान् लोग होवेंभी, तौ वे दूसरेसे द्वेष मत्सरकारिकै युक्त रहैते हैं. और राजा महाराजा लोगभी बहुतकरके है नहीं. जो कभी राजा महाराजालोग होवेंभी, तौ वे केवल धनमिलनेकीही एक बात जानते. हैं उनको धन मिलनेकी बडी तृष्णाउत्पन्न होतीहै. और दातालोगभी नहीं हैं जो कोईक दातालोग होवेंभी, तौ वे सेवा चाकरी करायकै फिर दान देतेहैं ॥ ६ ॥

सीदन्ति चाग्निहोत्राणि गुरुपूजा प्रणश्यति ॥
कुमार्यश्च प्रसूयन्ते प्राप्ते कलियुगे सदा ॥ ७ ॥

टीका–यह कलियुग, आनेसे अग्निहोत्र यज्ञविद्या तौ कष्ट पानेलगीहै. गुरु कहिये बाप, दादा, अध्यापक

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

उपदेशक आदिकी मान मान्यता पूजा नाशकूं प्राप्त-होतीहै. और आठ दशवर्षोंकी छोकरियां लडकेकूं पैदा-करतीहैं. ॥ ७ ॥

परान्नेनमुखं दग्धं हस्तौ दग्धौ प्रतिग्रहात् ॥
परस्त्रीभिर्मनो दग्धं कुतःशापः कलौ युगे ॥८॥

टीका—परायेके घर अन्न खाते खाते तौ मुख जल-गयाहै. और दक्षिणा लेतेलेते तौ हाथ जलगयाहै. और पराई स्त्रीकी चिंतन करते करते तौ मन जलगयाहै. ऐसी दशा होकेभी इस कलियुगमें कोई ब्राह्मण अथवा दूसरे कोईभी किसीको शाप देवें तौ उस शापका क्या फल होने-वालाहै, किंतु कुछभी उसशापका फलनहीं होगा.॥८॥

राक्षसाः कलिमाश्रित्य जायन्ते ब्रह्मयोनिषु ॥
ब्राह्मणानेव बाधन्ते तत्राऽपि श्रोत्रियान्कृशान् ९

टीका—इसकलियुगमें राक्षसलोग ब्राह्मणोंके घरोंमें जन्मलेतेहैं. और विचारे गरीब वेदशास्त्रके जाननेवाले

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

यज्ञ मूर्तिपूजन करनेवाले ब्राह्मणलोगोंकूहीं पीडा करतेहैं दुःखदेतेहैं, जैसे कि, अबी दयानंदी आर्यसमाजी लोगहैं. और सुधारामतके शास्त्रभ्रष्ट कितने एक ब्राह्मणलोग देखनेमें आतेहैं ॥ ९ ॥

इति खानदेशीयरावेरग्रामनिवासिपरशुरामभट्टतनयगोविंदशास्त्रिविरचितभाषाटीकासमेतकलिप्रभावः समाप्तः श्रीनृसिंहः प्रसीदतु ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बम्बई.

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

जाहिरात ।

क्रय्यपुस्तकें (नीतिग्रंथाः।)

नाम.	की. रु. आ.
शुक्रनीति–भाषाटीकासहित जिसमें राजा राजपत्नी और राजकुमारोंके मुख्यधर्मकी रीति और प्रजापालनादि सेनारचना तथा राजप्रवन्ध उत्तम प्रकारसे है ग्लेज ...	१–१२
रफ	१–८
चाणक्यनीति–भाषाटीका दोहासहित इसके देखनेसे मनुष्य नीतिकी उत्तम २ बातें जान सकते हैं...	०–८
विदुरनीति–श्रीमहाराज धृतराष्ट्रको विदुरने उपदेश दिया है यक्षप्रश्नोंके सहित ...	०–४

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

यज्ञ मूर्तिपूजन करनेवाले ब्राह्मणलोगोंकूहीं पीडा कर-तेहैं दुःखदेतेहैं, जैसे कि, अबी दयानंदी आर्यसमाजी लोगहैं. और सुधारामतके शास्त्रभ्रष्ट कितने एक ब्राह्मणलोग देखनेमें आतेहैं ॥ ९ ॥

इति खानदेशीयरावेरग्रामनिवासिपरशुरामभट्टतनय-गोविंदशास्त्रिविरचितभाषाटीकासमेतकलिप्रभावः समाप्तः श्रीनृसिंहः प्रसीदतु ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बम्बई.

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

जाहिरात ।

क्रय्यपुस्तकें (नीतिग्रंथाः।)

नाम।	की. रु. आ.
शुक्रनीति—भाषाटीकासहित जिसमें राजा राजपत्नी और राजकुमारोंके मुख्यधर्मकी रीति और प्रजापालनादि सेनारचना तथा राजप्रवन्ध उत्तम प्रकारसे है ग्लेज ...	१—१२
रफ	१—८
चाणक्यनीति—भाषाटीका दोहासहित इसके देखनेसे मनुष्य नीतिकी उत्तम २ बातें जान सकते हैं...	०—८
विदुरनीति—श्रीमहाराज धृतराष्ट्रको विदुरने उपदेश दिया है यक्षप्रश्नोंके सहित ...	०—४

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नाम.	की. रु. आ.
विदुरप्रजागर–भाषा–(छंदबद्ध) कविता-देखनेही योग्य है	०–४
राजनीति पंचोपाख्यान–भाषामें विष्णु-शर्माके पंचतंत्रका भाषान्तर	०–७
नीतिसंग्रह–(सामयिक श्लोक पद्यटीका समेत)...	०–४
वेकनविचार रत्नावली–(नीति शिक्षा)...	०–८
नीतिमनोरमा सटीक–नीतिके श्लोकोंकी टीका कवितोंमें वर्णितहै...	०–५
ठहरो अर्थात्–उपदेशदर्पण इसमें २०० शिक्षित चुटकुले हैं	०–४
ताजीरात हिन्द–हिन्दुस्थानका दंडसं-ग्रह–पं. बलदेवप्रसाद मिश्रद्वारा अनुवा-	

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नाम.	की. रु. आ.
दित फौजदारीमुकद्दमामें किस तरहसे अपराधीको शिक्षादेना इत्यादि ...	...१–१२
न्यायालयकार्यपत्रसंग्रह–इस पुस्तकमें अदालती कार्रवाईअर्जी दावा इत्यादि लिखनेके कायदे हैं...	...०–१०
अफजलुल कानून–(राजपूतानेके फौजदारीका कानून)	१–८
कुंडलिया गिरधरदासकृत–(सामयिक नीति वेदान्तसंयुक्त) अबकीबार दूनी होगई है	०–४
दंपतीवाक्यविलास–जिसमें सबदेशांतरकी यात्रा और धंधेका सुख पुरुषने मंडन किया है और स्त्रीमें खंडन किया है दोहा चौपाईमें सुभाषित	०–१२

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नाम. कि. रु. आ.

कलाविलास—दुरंगी दुनियाका रंगढंग जानना हो, घडी दो घडी जी बहलानाहो, चालाकों, चोरों, व्यभिचारियों आदिसे बचनाहो, अपने धन और धर्मकी रक्षा करना हो, संसारव्यवहारके भेदिये बनना हो तो इस १५०० कलाओंके भंडारको भी मँगादेखिये... ... ... १—०

उद्योगप्रारब्धविचार—भाग्यके भरोसेसे रहना या उद्यमकर कीर्ति प्राप्त करना इस विषयमें अनेक श्रुति स्मृति पुराण न्याय नीतिके दृष्टान्तों सहित सिद्धान्त दर्शाया है एकबेर यह ग्रंथ आदिसे अंततक अवश्य पढना चाहिये ... ... १—०

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नाम.	की. रु. आ.
अक्षयनीतिसुधाकर-(श्रीमहाराज कुमार श्री १०८ अक्षयसिंहजी वनेडा मेवाडप्रणीत) राजप्रबन्ध अर्थात् किसरीतिसे राजाओंको वर्तमान समयमें नीतिसे वरतावकरना चाहिये इत्यादि राजनीतिका अपूर्व ग्रंथहै इस समयमें राजकुमारोंको अवश्य पढने योग्य है	२-०
कामंदकीय नीतिसार (महाभारतान्तर्गत)-पं. ज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीका अच्छे अच्छे नीतिके उपदेश दिखाये है	०-१२
नीतिरत्नमाला-पञ्चनदीय-पं सुदर्शनाचार्येण संगृहीता--हिन्दीभाषाटीकासहित	०-५
भर्तृहरिशतक-नीति, शृंगार, वैराग्य भाषाटीका समेत	१-०

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नाम.	की, रु. आ.
गीतगोविंद–राधाविनोदसहित भाषाटीका जयदेव गोस्वामिकृत इसमें अति ललित संस्कृतमें रागमय राधाकृष्णका प्रेममय भक्तिकी गानेकी चीजें विद्यमान है...	१
तथा मूल मात्र	०–२
श्रीरामगीतगोविन्द–सटीकम् । गीतगोविन्दके अनुसार सीतारामकी भक्तिकी गानकी अतिललित संस्कृतमें राजमयचीजें वर्णितहैं	०–८
नलोदयकाव्यम्–सटीक महाराजा नल और दमयंतीका चरित्र वर्णन ...	०–१२

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बंबई.

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीपरदेवतायै नमः ॥ श्रीमेधादक्षिणामूर्तये नमः ॥
श्रीदेव्युवाच ॥ श्रीमत्रिपुरसुंदर्या या या विद्याः सुदुर्लभाः ॥ कृपया कथिताः
सर्वाः श्रुतांश्चाधि[illegible] ॥ १ ॥ प्राणनाथाधुना ब्रूहि कवचं मंत्रविग्रहम् ॥
त्रैलोक्यमोहनं चेति नामतः कथितं पुरा ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि सर्वार्थकवचं
स्फुटम् ॥ २ ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सुंदरि प्राणवल्लभे
॥ त्रैलोक्यमोहनं नाम सर्वविद्यौघविग्रहम् ॥ ३ ॥ यद्धृत्वा दानवान्विष्णुर्निज-
घान मुहुर्मुहुः ॥ सृष्टिं वितनुते ब्रह्मा यद्धृत्वा पठनाद्यतः ॥ ४ ॥ संहर्ताहं यतो
देवि देवेशो वासवो यतः ॥ धनाधिपः कुबेरोऽपि यतः सर्वे दिगीश्वराः ॥ ५ ॥
न देयं यदशिष्येभ्यो देयं शिष्येभ्य एव च ॥ अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो
दत्त्वा मृत्युमवाप्नुयात् ॥ ६ ॥ श्रीमत्रिपुरसुंदर्याः कवचस्य ऋषिः शिवः ॥ छंदो
विराट् देवता च श्रीमत्रिपुरसुंदरी ॥ ७ ॥ धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः
प्रकीर्तितः ॥ ८ ॥

अथ मंत्रोद्धारः ॥ कामं विष्णुयुतं देवि शक्तिमायेंद्रमेव च । महामायां लिखे-
त्पश्चाद् वाग्भवं कूटमुद्धरेत् ॥१॥ शिरो मे वाग्भवं पातु "कएईलह्रीं" रूपकं ॥१॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

अस्यार्थः ॥ कामं व्यंजनरूपं " ककारं " । विष्णुना अकारेण युतं तेन अकारसहितो व्यंजनस्वररूपः ककारः सस्वरो जातः । शक्तिः " एकारः " माया दीर्घ "ईकारः" इन्द्रः " लकारः " महामाया "ह्रींकारः" ॥ तेन "कएईलह्रीं" इति वाग्भवकूटं ॥ १ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ वियच्चंद्रस्ततः पश्चात् कलौ लकुलि वह्नि च । मायास्वरेण संयुक्तं नादबिंदुकलान्वितम् ॥ प्रथमं कामराजस्य कूटं परमदुर्लभम् ॥ २ ॥ " हसकलह्रीं " ललाटं पातु कामेश्वरी मम ॥ २ ॥

अस्यार्थः ॥ वियत् " हकारः " सस्वरः चंद्रः "सकारः" सस्वरः कलौ "ककारलकारौ" सस्वरौ लकुलि व्यंजनरूपः हकारः एतत् लकुलि वह्निरूपं व्यंजनद्वयं । मायास्वरेण "दीर्घईकारेण" संयुक्तं कृत्वा नादेन "अर्धचंद्रेण" बिंदुकलया "बिंदुस्वरेण" अन्वितं कर्तव्यं तेन "हसकलह्रीं" इति वर्णस्वरूपं पंचमीविद्यायां द्वितीयकूटं भवति ॥ प्रथमकामराजस्य कूटं पंचमीविद्यायां प्रथमकूटं भवति ॥ २ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ वियद्विष्णुयुतं कामो हंसः शक्रस्ततः परम् । महामाया ततः पश्चात्स्वभावतीति कथ्यते ॥३॥ "हकहलह्रीं" दृशौ मे पातु कामेश्वरी सदा ॥३॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अस्यार्थः ॥ वियत् व्यंजनस्वरूपः "हः" विष्णुना अकाररूपस्वरेण युतं युक्तं कर्तव्यं तेन अकारस्वरसहितः व्यंजनरूपः " हः " इति रूपो जातः । कामः सस्वरः " कः " हंसः " हः " शक्रः सस्वरः " लः ॥३॥ महामाया " ह्रीं " । एतत् पंचवर्णस्वरूपं " हकहलह्रीं " पंचमीविद्यायाः तृतीयकूटं ज्ञेयम् ॥ ३ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ मादनं शिवबीजं च वाग्बीजं च ततः परम् । इंद्रबीजं ततः पश्चान्महामायां समुद्धरेत् ॥४॥ "कहऐंलह्रीं" श्रुती मे सदा पातु तुरीयकम् ॥४॥

अस्यार्थः ॥ मादनं सस्वरः " कः " शिवबीजं सस्वरः " हः " वाग्बीजं " ऐं " इंद्रबीजं सस्वरः " लः " महामाया "ह्रीं" ॥ इति पंचवर्णस्वरूपं "कहऐंलह्रीं" पंचमीविद्यायाः तुरीयं कूटं ज्ञेयम् ॥ ४ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ शिवबीजं तथा कामं इंद्रं देवीं नियोजयेत् । महामायां ततः पश्चात्पंचमं कूटमुद्धरेत् ॥५॥ "हकलसह्रीं" पंचमं पातु जिह्वां च पंचमी ॥ ५ ॥

अस्यार्थः ॥ शिवबीजं " हः " कामः " कः " इंद्रः " लः " देवी "सः" महामाया " ह्रीं " ॥ " हकलसह्रीं " इति पंचवर्णस्वरूपं पंचमीविद्यायाः पंचमकूटमुद्धृतं भवति ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

श्लो. ३ — कव. ३

अथ पंचमीविद्योद्धारे यत्र यत्र व्यंजनस्वरूपं अक्षरमुद्धृतं भवति तत्रतत्र स्वरसंयुक्तं तदक्षरं भवति ॥ ५ ॥

“ कएईलह्रीं । हसकलह्रीं । हकहलह्रीं । कहऐंलह्रीं । हकलसह्रीं ” । वदनं सदा पातु पंचकूटा तु पंचमी ॥ ६ ॥ पंचमीविद्योद्धारस्तूक्त एव ॥ ६ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ स्मरो योनिस्तथा लक्ष्मीर्वासवो भुवनेश्वरी ॥ ७ ॥ “ कएईलह्रीं ” घ्राणं मे पातु वाग्भवसंज्ञकम् ॥ ७ ॥

अस्यार्थः ॥ स्मरः “ कः ” योनिः “ एः ” लक्ष्मीर्दीर्घ “ ईः ” । वासवो “ लः ” सस्वरः । भुवनेश्वरी “ ह्रीं ” । इति भुवनेश्वरीबीजम् ॥ ७ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ रविश्चंद्रस्तथा कामो रविरिंद्रस्तथा परा ॥ ८ ॥ “ हसकहलह्रीं ” कंठं पातु कामेशसंज्ञकम् ॥ ८ ॥

अस्यार्थः ॥ रविः “हः” चंद्रः “ सः ” कामः “ कः ” रविः “ हः ” इंद्रः “लः” परा “ ह्रीं ” ॥ ८ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ चंद्रः कामः शुनासीरः पराबीजं ततः परं । एषा पंचदशी

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

विद्या कामेनोपासिता सदा ॥ ९ ॥ " सकलह्रीं " शक्तिकूटं स्कंधौ पातु सदा मम ॥ ९ ॥

अस्यार्थः ॥ चंद्रः " सः " कामः " कः " शुनासीरः "लः" पराबीजं "ह्रीं" ॥ ९ ॥ कएईलह्रीं । हसकहलह्रीं । सकलह्रीं मे । कामेनोपासिता विद्या कक्षदेशे सदावतु ॥ १० ॥ कामराजोपासितपंचदशीविद्योद्धारस्तूक्त एव ॥ १० ॥

मंत्रोद्धारः ॥ कामो माया रमा वाणी परा तारः शिवप्रिया । हरिप्रिया त्रिबीजा च त्रिपुरा वाक् परा पुनः ॥ ११ ॥ " क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः । कामादिषोडशी पातु भुजौ त्रिपुरसुंदरी ॥११॥

अस्यार्थः ॥ कामः " क्लीं " माया " ह्रीं " रमा " श्रीं " वाणी "ऐं" परा "सौः" तारा " ॐ " शिवप्रिया " ह्रीं " हरिप्रिया " श्रीं " त्रिबीजा " ऐंक्लींसौः " त्रिपुरा " श्रींह्रींक्लीं " वाक् "ऐं" परा "सौः" ॥ ११ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ कामो माया रमा बाला त्रिपुरा स्त्री भगांकुशौ । कालिका कम-

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

ला कूर्चः सर्वादौ प्रणवः प्रिये ॥१२॥ ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं स्त्रीं एं क्रौं क्रीं श्रीं हुं । तारादिषोडशी पातु मणिबंधद्वयं मम ॥ १२ ॥

अस्यार्थः ॥ कामः " क्लीं " माया " ह्रीं " रमा " श्रीं " बाला "ऐंक्लींसौः" त्रिपुरा " श्रींह्रींक्लीं " स्त्री " स्त्रीं " इति बीजं । भगः " एः " अंकुशः "क्रों" कालिका "क्रीं" कमला " श्रीं " कूर्चः " हुं " इति कवचं । प्रणवः " ॐ " ॥ १२ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ श्रीर्माया मदनो वाणी परा तारः शिवप्रिया । हरिप्रिया त्रिकूटा च परा वाणी मनोभवः ॥ माया लक्ष्मीर्महाविद्या सबीजा षोडशी परा ॥ १३ ॥ " श्रींह्रींक्लींऐंसौः ॐह्रींश्रींऐंक्लींसौः सौःऐंक्लींह्रींश्रीं " । रमादिषोडशी पातु करौ त्रिपुरसुंदरी ॥ १३ ॥

अस्यार्थः ॥ श्रीः " श्रीं " माया " ह्रीं " मदनः " क्लीं " वाणी "ऐं" परा "सौः" तारः " ॐ " शिवप्रिया " ह्रीं " हरिप्रिया " श्रीं " त्रिकूटा " ऐंक्लींसौः " परा "सौः" वाणी " ऐं " मनोभवः "क्लीं" माया "ह्रीं" लक्ष्मीः " श्रीं " ॥ १३ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ मायात्मा प्रणवो वाणी माया लक्ष्मीश्च सुंदरी । युवत्यंकुशवा-

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ग्माया कूर्चयुग्मं रमेति च ॥ १४ ॥ " ह्रीं ह्स्रौः ॐ ऐंह्रींश्रीं ऐंक्लींसौः स्त्रींक्रों
ऐंह्रींहूंहूंश्रीं । " मायादिषोडशी ख्याता हृदयं परिरक्षतु ॥ १४ ॥

अस्यार्थः ॥ माया " ह्रीं " । आत्मा आत्मबीजं " ह्स्रौः " । प्रणवः " ॐ " वाणी " ऐं " माया " ह्रीं " लक्ष्मीः " श्रीं " सुंदरी बाला " ऐंक्लींसौः " । युवति "स्त्रीं" । अंकुशः " क्रों " । वाणी " ऐं " । माया " ह्रीं " । कूर्चयुग्मं दीर्घहूंकारद्वयं । रमा " श्रीं " ॥ १४ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ वागादिप्रणवाः पंच त्रिपुरे द्वे पुनश्च ते । अनुलोमविलोमाभ्यां
शापदोषो न विद्यते ॥ वागादिषोडशी पूर्णा सरस्वत्याप्युपासिता ॥ १५ ॥
" ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं सौः क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं " । वागादिषो-
डशी पातु स्तनौ मे सुंदरी परा ॥ १५ ॥

अस्यार्थः ॥ वाग्भवबीजादिपंचप्रणवा आगमशास्त्रे प्रसिद्धाः । उद्धृताश्च ते प्रणवाः पंच । " ऐंह्रींश्रींक्लींसौः " पंचप्रणवोद्धारः ॥ यथा ॥ वाग्भवं भुवनेशीं च रमाबीजं मनोभवः । बीजं बाला तृतीयं च पराख्यं बीजमुत्तमम् ॥ पंच तारा इमे ज्ञेया मंत्रादौ योजिताः प्रिये । मंत्रस्य सिद्धिदाः प्रोक्तास्तस्मादादौ प्रयोजयेत् ॥ त्रिपुरे द्वे वारद्वयं । अनुलोमविलोमेन बालाविद्या

२

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

" ऐंक्लींसौः सौःक्लींऐं "। पुनश्च ते वागादयः पंच प्रणवाः "सौःक्लींश्रींह्रींऐं " इयंच वागादिषोडशी ॥ १५ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ स्मरं योनिं श्रिया सार्धं तथा चागस्तिवाग्भवं । कामबीजं कामकूटमगस्त्यकामराजयोः ॥ शक्तिबीजं शक्तिकूटमगस्त्यकामराजयोः । एवं वर्णांल्लिखेत्प्राज्ञो विंशत्यर्णा समीरिता ॥ १६ ॥ " कएश्रींहसकलह्रींक्लींहसकहलह्रीं सौःसकलह्रीं नखवर्णा पार्श्वौ पात्वपराजिता ॥ १६ ॥

अस्यार्थः ॥ आदौ स्मरं " कः " । तदनंतरं योनिं " एः " । एतद्बीजद्वयं । श्रिया " श्रीं " । इति बीजेन सार्धं उच्चरेत् । तदनंतरं " हसकलह्रीं " इति पंचवर्णा अगस्तिवाग्भवकूटं विद्यायाः अपराजिताख्यविद्यायाः वाग्भवकूटमुद्धरेत् ॥ तदनंतरं कामबीजं "क्लीं"। अगस्त्यकामराजयोः कामकूटं " हसकहलह्रीं " इति उद्धरेत् । तदनंतरं शक्तिबीजं " सौः " । अगस्त्यकामराजयोः तृतीयं कूटं " सकलह्रीं " इति शक्तिकूटं उद्धरेत् । तेन नखरव्वर्णा अपराजिता विद्या [illegible] भवति ॥ १६ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ भुवनेशी प्राणजीवौ जीवप्राणौ तथेश्वरी । जीवप्राणौ प्राणजीवौ कामबीजं तथोद्धरेत् ॥ अगस्त्यकामराजस्य षड्वर्णांश्च तथोद्धरेत् । मायाशक्ति-

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

युगे शंभुः षड्वर्णा कुंभजन्मनः ॥ कामराजाख्यकूटस्य कामबीजं तथोद्धरेत् ॥ प्राणजीवौ जीवप्राणौ मायाबीजं तथोद्धरेत् । जीवप्राणौ प्राणजीवौ भुवनेशी तथोद्धरेत् ॥ १७ ॥ " ह्रीं ह्सौं स्हौं ह्रीं स्हौं ह्सौं क्लीं हसकहलह्रीं ह्रीं ह्रीं सौः सौः हहसकहलह्रींक्लींह्सौं स्हौंह्रींस्हौंह्सौं ह्रींमे ॥ सुंदरीयं समाख्याता महापुरुषपूजिता । महागुह्यस्वरूपा च केवलानंदचिन्मयी ॥ एकत्रिंशद्वर्णरूपा कटिदेशं सदावतु ॥ १७ ॥

अस्यार्थः ॥ भुवनेशी"ह्रीं" ॥१॥ प्राणजीवौ प्राणः "हः" जीवः "सः" "औ" औकारः । तेन ह्सौ इति जातं । अत्र बिंदुरहितानां "हकार-सकार-औकार" रूपाणां त्रयाणां वर्णानां बीजत्वं भवति। तेन तंत्रांतरैकवाक्यत्वसापेक्षत्वेन संप्रदायाच्च "हकार-सकार-औकारा"ख्यवर्णत्रयाढ्यबीजस्योपरि बीजत्वसिद्धये शिरसि अर्धचंद्राबिंदुलक्षणं ध्वनिरूपं वर्णद्वयं ज्ञेयं । एवमन्यत्रापि जीवप्राणौ इति स्थले ज्ञेयं " ह्सौं " ॥ २ ॥ जीवप्राणौ । जीवः " सः " प्राणः " हः " औ औकारः शेषं प्राग्वत् ॥ ३ ॥ तथा ईश्वरी भुवनेश्वरी बीजं " ह्रीं " ॥ ४ ॥ जीवप्राणौ " स्हौं " ॥ ५ ॥ प्राग्वत् प्राणजीवौ " ह्सौं " ॥ ६ ॥ कामबीजं " क्लीं " ॥ ७ ॥ अगस्त्यकामराजकूटस्थान्षड्वर्णान् " हसकहलह्रीं" उद्धरेत् ॥ १३ ॥ मायायुगं "ह्रीं

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ह्रीं" ॥ १५ ॥ शक्तियुगं " सौः सौः " ॥१७॥ शंभुः " हः " ॥१८॥ पुनः कुंभजन्मनः अगस्त्यकामराजविद्यायाः कामकूटस्थ " हसकहलह्रीं " इति षड्वर्णान् उद्धरेत् ॥२४॥ ततः कामबीजं " क्लीं " ॥ २५ ॥ प्राणजीवौ " ह्सौं " ॥२६॥ प्राग्वत् जीवप्राणौ " स्हौं " ॥ २७ ॥ माया " ह्रीं " जीवप्राणौ " स्हौं " ॥ २९ ॥ पूर्ववत् प्राणजीवौ " ह्सौं " ॥ ३० ॥ भुवनेश्वरी " ह्रीं " ॥ ३१ ॥ १७ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ आकाशजीवकामेंद्रभुवनेशी तथोद्धरेत् । आकाशजीवकामाभ्रशक्रमीशानवल्लभाम् ॥ जीवं कामं तथा शक्रं भुवनेशीं तथोच्चरेत् ॥ १८ ॥

अगस्त्योपासिता लोपामुद्रेयं पशुहारिणी ॥ समुद्रशोषिणी देवी महापापौघनाशिनी ॥ १९ ॥ " हसकलह्रीं "मे पृष्ठं कूटं वाग्भवसंज्ञकम् ॥ " हसकहलह्रीं" कुक्षिं कामकूटं सदावतु ॥ वक्षस्थलं शक्तिकूटं " सकलह्रीं " सदावतु ॥१८॥ "हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं" मे । लोपामुद्रा पंचदशी मध्यदेशं सदावतु ॥ १९ ॥

अस्यार्थः ॥ आकाशः " हः " जीवः " सः " कामः "कः" इंद्रः " लः " भुवनेशी "ह्रीं" ॥ पुनः आकाशः " हः " जीवः " सः " कामः " कः " अभ्रः " हः " शक्रः

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

“ ल: ” ईशवल्लभा “ ह्रीं ” ॥ पुनः जीवः “ सः ” कामः “ कः ” शक्रः “ लः ”
भुवनेशी “ह्रीं” ॥ एतस्या विद्यायाः कस्मिंश्चित्तंत्रे अगस्त्यविद्या इति नाम कस्मिंश्चित्तंत्रांतरे
लोपामुद्राविद्येति नाम इति नाम्नोर्व्यत्ययो ज्ञेयः ॥ १८ ॥ १९ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ कामो व्योम च योनिश्च लक्ष्मीरिंद्रः शिवप्रिया । आकाशो
मदनो योनिर्लक्ष्मीरिंद्रः शिवप्रिया। जीवः कामश्च योनिश्च लक्ष्मीरिंद्रः शिवप्रि-
या । एषा तु मानवी विद्या सर्वतो मां सदावतु ॥ २० ॥ २१ ॥ “ कहएईल-
ह्रीं ” नाभिं “ हकएईलह्रीं ” कटिं । सक्थिनी मे सदा पातु “ सकएई-
लह्रीं ” सदा ॥ २० ॥ “ कहएईलह्रीं हकएईलह्रीं सकएईलह्रीं ” मे । मान-
वीविद्या सर्वतः परिरक्षतु ॥ २१ ॥

अस्यार्थः ॥ कामः “ कः ” व्योम “ हः ” योनिः “ एः ” लक्ष्मीः “ ईः ” इंद्रः
“ लः ” शिवप्रिया “ ह्रीं ” । आकाशः “ हः ” मदनः “ कः ” योनिः “ एः ”
लक्ष्मीः “ ईः ” इंद्रः “ लः ” शिवप्रिया “ ह्रीं ” । जीवः “ सः ” कामः “ कः ”
योनिः “ एः ” लक्ष्मीः “ ईः ” इंद्रः “ लः ” शिवप्रिया “ ह्रीं ” ॥ २० ॥ २१ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ जीवः प्राणश्च कामश्च योनिर्लक्ष्मीः शतक्रतुः । शिवप्रिया च

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF
CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

जीवश्च प्राणः कामो नभस्तथा । योनिर्लक्ष्मीः सहस्राक्षो महामाया नभस्तथा ।
जीवः कामश्च योनिश्च लक्ष्मीरिंद्रस्ततः परं। महामायांतिका विद्या चंद्राराधितदे-
वता । द्वाविंशत्यक्षरी प्रोक्ताऽमृताख्या देवि दुर्लभा ॥ २२ ॥ २३ ॥ " सह-
कएईलह्रीं " मे ऊरुयुग्मं सदावतु । " सहकहएईलह्रीं " गुह्यं पातु सदा मम ।
" हसकएईलह्रीं " तु जानुनी पातु मे सदा ॥ २२ ॥ " सहकएईलह्रीं सहक-
हएईलह्रीं हसकएईलह्रीं " मम । जलजे भयसंघाते सर्वतः परिरक्षतु ॥ २३ ॥

अस्यार्थः ॥ जीवः " सः " प्राणः " हः " कामः " कः " योनिः " एः " लक्ष्मीः
" ईः " शतक्रतुः " लः " शिवप्रिया " ह्रीं " जीवः " सः " प्राणः " हः " कामः
" कः " नभः " हः " योनिः " एः " लक्ष्मीः " ईः " सहस्राक्षो " लः " महामाया
" ह्रीं " नभः " हः " जीवः " सः " कामः " कः " योनिः " एः " लक्ष्मीः " ईः "
इंद्रः " लः " महामाया " ह्रीं " ॥ २२ ॥ २३ ॥

मंत्रोद्धारः॥ प्राणो जीवस्तथा कामो योनिर्लक्ष्मीः शतक्रतुः। महामाया शिवो
जीवः कामः शंभुर्भगस्तथा ॥ वामनेत्रं सहस्राक्षो भुवनेशी ततः परं। जीवः प्रा-
णः कामराजो योनिर्लक्ष्मीः पुरंदरः॥ हृल्लेखा च ततः प्रोक्ता विद्या धनदपूजि-

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ता । निधिदा गगने यानं ददात्यखिलसिद्धिदा ॥ २४ ॥ २५ ॥ " हसकएई-
लह्रीं " मे गुल्फयुग्मं सदावतु । " हसकहएईलह्रीं " पादौ पातु सदा मम ।
" सहकएईलह्रीं " मे प्रपदौ पातु सर्वदा ॥ २४ ॥ " हसकएईलह्रीं हसक-
हएईलह्रीं सहकएईलह्रीं" सदा कुबेरेण प्रपूजिता । द्वाविंशत्यक्षरी विद्या सर्वांगं
मे सदावतु ॥ २५ ॥

अस्यार्थः ॥ प्राणः " ह: " जीवः " सः " कामः " कः " योनिः " एः " लक्ष्मीः " ईः " शतक्रतुः " लः " महामाया " ह्रीं " शिवः " हः " जीवः " सः " कामः " कः " शंभुः " हः " भगः " एः " वामनेत्रः " ईः " सहस्राक्षो " लः " भुवनेशी " ह्रीं " । जीवः " सः " प्राणः " हः " कामः " कः " योनिः "एः" लक्ष्मीः "ईः" पुरंदरः " लः " हृल्लेखा " ह्रीं " ॥ २४ ॥ २५ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ मनोभूर्योनिर्वामाक्षी पुरंदरशिवप्रिया । प्राणो जीवोऽनंगशंभू शुनासीरो हरप्रिया ॥ जीवः प्राणः पुनर्जीवश्चित्तजन्मा पुरंदरः । महामायेति संप्रोक्ता लोपामुद्राप्रपूजिता ॥ महासौभाग्यजननी सूर्यादिस्तंभकारिणी ॥२६॥
॥ २७ ॥ " कएईलह्रीं " प्राच्यां मां त्रिपुरा परिरक्षतु ॥ " हसकहलह्रीं "

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

पातु वह्निकोणे निरंतरं ॥ " सहसकलह्रीं " याम्यां पातु मां सर्वसिद्धिदा ॥ २६ ॥ कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सहसकलह्रीं विद्यागस्त्यसेव्या च चक्रस्था मां सदावतु ॥ २७ ॥

अस्यार्थः ॥ मनोभूः " कः " योनिः " एः " वामाक्षी " ईः " पुरंदरः " लः " शिवप्रिया " ह्रीं " ॥ प्राणः " हः " जीवः " सः " अनंगः कः " शंभुः " हः " शुनासीरः " लः " हरप्रिया " ह्रीं " जीवः " सः " प्राणः " हः " पुनः जीवः "सः" चित्तजन्मा " कः " पुरंदरः " लः " महामाया " ह्रीं " ॥ एतस्या विद्यायाः क्वचित्तंत्रे अगस्त्यविद्येति नाम तन्त्रान्तरे च लोपामुद्रेति संप्रदायभेदाज्ज्ञेयम् ॥ २६ ॥ २७ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ जीवो योनिर्वामनेत्रपुरंदरहरप्रियाः । जीवः प्राणश्चित्तजन्मा हरः शक्रः शिवप्रिया ॥ जीवः कामः सहस्राक्षः शिवपत्नी ततो भवेत् । नंद्याराधितविद्येयं शिवसान्निध्यकारिणी ॥ २८ ॥ २९ ॥ " सएईलह्रीं " च नित्यं नैरृत्यां मां सदावतु ॥ " सहकहलह्रीं " पातु प्रतीच्यां मे द्वितीयकम् ॥ "सकलह्रीं " तु वायव्ये सदा मां परिरक्षतु ॥ २८ ॥ " सएईलह्रीं सहकहलह्रीं सकलह्रीं " तु । नंद्याराधितविद्येयं सर्वांगं मे सदावतु ॥ २९ ॥

CSU Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अस्यार्थः ॥ जीवः " सः " योनिः " एः " वामनेत्रः " ईः " पुरंदरः " लः " हरप्रिया " ह्रीं " ॥ जीवः " सः " प्राणः " हः " चित्तजन्मा " कः " हरः "हः " शक्रः " लः " शिवप्रिया " ह्रीं " ॥ जीवः " सः " कामः " कः " सहस्राक्षः "लः" शिवपत्नी " ह्रीं " नंद्याराधितविद्योद्धारस्तूक्तप्रायः ॥ २८ ॥ २९ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ प्राणो जीवस्तथा कामः सहस्राक्षो हरप्रिया ॥ जीवः प्राणः कामराजो पुरंदरो हरप्रिया ॥ जीवः कामः शिवः शक्रः शिवपत्नी तथैव च । सूर्याराधितविद्येयं महातेजःप्रदायिनी ॥ ३० ॥ ३१ ॥ " हसकलह्रीं " वायव्ये " सहकलह्री " मुत्तरे ॥ " सकलह्री " मीशान्ये सुंदरी पातु मां सदा ॥ ३० ॥ " हसकलह्रीं सहकलह्रीं सकहलह्रीं " मां । ऊर्ध्वे रक्षतु मे नित्यं सूर्यपूज्या महोदया ॥ ३१ ॥

अस्यार्थः ॥ प्राणः " हः " जीवः " सः " कामः " कः " सहस्राक्षः " लः " हरप्रिया " ह्रीं " जीवः " सः " प्राणः " हः " कामराजः " कः " पुरंदरः " लः " हरप्रिया " ह्रीं " ॥ जीवः " सः " कामः " कः " शिवः " हः " शक्रः " लः " शिवपत्नी " ह्रीं " ॥ सूर्यविद्योद्धारस्तूक्तप्राय एव ॥ ३० ॥ ३१ ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

मंत्रोद्धारः ॥ कामो योनिर्विष्णुजाया शक्रः शिवनितंबिनी ॥ शिवो जीवः कामराजः शिवः शक्रो हरप्रिया ॥ जीवः कामः सहस्राक्षः शिवपत्नी तथैव च ॥ इयं पंचदशी देवराजपूज्या निरंतरं ॥ महासिद्धिप्रदा प्रोक्ता जगद्वश्यविधायिनी ॥ ३२ ॥ " कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं " मे । सर्वांगं वै शक्रपूज्या सततं परिरक्षतु ॥ ३२ ॥

अस्यार्थः ॥ कामः "कः" योनिः "एः" "विष्णुजाया "ईः" शक्रः "लः" शिवनितंबिनी "ह्रीं" शिवः "हः" जीवः "सः" कामराजः "कः" शिवः "हः" शक्रः "लः" हरप्रिया "ह्रीं" ॥ जीवः "सः" कामः "कः" सहस्राक्षः "लः" शिवपत्नी "ह्रीं" ॥ ३२ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ कामो योनिर्वामनेत्रं शुनासीरः शिवप्रिया ॥ आकाशो मदनाकाशौ पुरंदरो हरप्रिया ॥ प्राणो जीवः कामराजः शक्रः शिवनितंबिनी ॥ ब्रह्मविद्येयमाख्याता परब्रह्मस्वरूपिणी ॥ ३३ ॥ " कएईलह्रीं हकहलह्रीं हसकलह्रीं" च । ब्रह्माणी मां सदा पायाच्छ्रीमत्त्रिपुरसुंदरी ॥ ३३ ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अस्यार्थः ॥ कामः " कः " योनिः " एः " वामनेत्रं " ईः " शुनासीरः " लः " शिवप्रिया " ह्रीं " आकाशः " हः " मदनः " कः " पुनराकाशः " हः " पुरंदरः " लः " हरप्रिया " ह्रीं " प्राणः " हः " जीवः " सः " कामराजः " कः " शक्रः " लः " शिवनितंबिनी " ह्रीं " ॥ ३३ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ प्राणो जीवः स्मरः शक्रः शिवपत्नी महेश्वरः ॥ जीवः कामः पशुपतिः शक्रः शिवनितंबिनी ॥ जीवः स्मरः सहस्राक्षो हरपत्नी नभस्ततः ॥ जीवः कामः सहस्राक्षः शंभुर्जीवः स्मरः शिवः ॥ इंद्रो जीवः स्मरः शक्रः शिवपत्नी तथैव च ॥ चतुष्कूटा महाविद्या वसुपक्षार्णवसंमिता ॥ शिवेन पूजिता नित्यं शिवरूपविधायिनी ॥ ३४ ॥ " हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं " च " हसकलहसकहलसकलह्रीं " शांकरी । चतुष्कूटा महाविद्या पाताले मां सदावतु ॥ ३४ ॥

अस्यार्थः ॥ प्राणः " हः " जीवः " सः " स्मरः " कः " शक्रः " लः " शिवपत्नी " ह्रीं " महेश्वरः " हः " जीवः " सः " कामः " कः " पशुपतिः " हः " शक्रः " लः " शिवनितंबिनी " ह्रीं " जीवः " सः " स्मरः " कः " सहस्राक्षः " लः "

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

हरपत्नी " ह्रीं " नभः " हः " जीवः " सः " कामः " कः " सहस्राक्षः " लः " शंभुः " हः " जीवः " सः " स्मरः " कः " शिवः " हः " इंद्रः " लः " जीवः " सः " स्मरः " कः " शक्रः "लः" शिवपत्नी "ह्रीं" ॥ ३४ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ प्राणो जीवः स्मरः शक्रो हरजाया शिवः सकौ ॥ शिवः शक्रो महामाया जीवः कामः शतक्रतुः ॥ महामाया सहौ कामः शतक्रतुर्हरप्रिया ॥ जीवः प्राणः स्मरः शंभुः शक्रः शिवनितंबिनी ॥ जीवः प्राणः पुनर्जीवः स्मरः शक्रः शिवप्रिया ॥ षट्कूटा वैष्णवी प्रोक्ता सकलापन्निवारिणी ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ " हसकलह्रीं " माधारं ॥ " हसकहलह्रीं " लिंगे ॥ " सकलह्रीं " पातु नाभिं ॥ " सहकलह्रीं " हृदये ॥ " सहकहलह्रीं " कंठं ॥ " सहसकलह्रीं " ह्रीं सहसकलह्रीं ॥ मनोभवा सदा पातु रससंख्या महाप्रभा । षट्कूटा वैष्णवी विद्या पातु मां सुंदरी परा ॥ ३६ ॥

" हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं । सहकलह्रीं सहकहल- नाभ्याम् ॥ ३५ ॥

अस्यार्थः ॥ प्राणः " हः " जीवः " सः " स्मरः " कः " शक्रः " लः " हरजाया " ह्रीं " । "हसकलह्रीं" ॥ १ ॥ शिवः "हः" सकौ " सकारककारौ" शिवः " हः "

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

शक्रः " लः " महामाया " ह्रीं " । " हसकहलह्रीं " ॥ २ ॥ जीवः " सः " कामः " कः " शतक्रतुः " लः " महामाया "ह्रीं" " सकलह्रीं " ॥ ३ ॥ " सहौ " सकार-हकारौ । कामः " कः " शतक्रतुः " लः " हरप्रिया " ह्रीं " । " सहकलह्रीं " ॥ ४ ॥ इदं सूर्यविद्याया द्वितीयं कामराजकूटं ज्ञेयम् ॥ जीवः " सः " प्राणः " हः " स्मरः " कः " शंभुः " हः " शक्रः " लः " शिवनितंबिनी " ह्रीं " । " सहकहलह्रीं " ॥ ५ ॥ जीवः " सः " प्राणः " हः " पुनर्जीवः " सः " स्मरः " कः " शक्रः "लः" शिवप्रिया " ह्रीं " ॥ " सहसकलह्रीं " ॥ ६ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ कामो भगो रमा शक्रः शंभुरग्निस्त्रिमूर्तिधृक् । प्राणो जीवः स्मरः शंभुः शक्रः शंभुस्तनूनपात् ॥ वामनेत्रयुतो जीवः कामः शक्रो महे-श्वरः । वह्निर्वामाक्षिसंयुक्तो विद्या दुर्वाससा पुरा ॥ आराधिता शत्रुनाशकरी ज्ञेया सुदुर्लभा ॥ ३७ ॥ " कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं " च । दुर्वाससा प्रपूज्या मां दिक्षु विद्या सदावतु ॥ ३७ ॥

अस्यार्थः ॥ कामः " कः " भगः " एः " रमा " ईः " शक्रः " लः " शंभुः "हः" अग्निः " रः " अयं त्रिमूर्तिना श्रीकंठादिन्यासे उक्तदीर्घईकारेण युक्तः तेन " ह्रीं " इति

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

जातः ॥ प्राणः " हः " जीवः " सः " स्मरः " कः " शंभुः " हः " शक्रः " लः " पुनः शंभुः " हः " तनूनपात् अग्निः " रः " अयं वामनेत्रेण दीर्घईकारेण युक्तः तेन " ह्रीं " इति जातं ॥ जीवः " सः " कामः " कः " शक्रः " लः " महेश्वरः " हः " वह्निः " रः " वामाक्षियुक्तः दीर्घईकारयुक्तः तेन " ह्रीं " इति जातं ॥ ३७ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ कामः शिवो भगो लक्ष्मीरिंद्रः शिवनितंबिनी । शिवः शक्रो भगो लक्ष्मीरिंद्रः शिवनितंबिनी । जीवः स्मरो भगो लक्ष्मीरिंद्रः शिवनितंबिनी ॥ अष्टादशाक्षरी विद्या यमेनाराधिता सदा ॥ ३८ ॥ " कहएईलह्रीं हलएईलह्रीं सकएईलह्रीं " । क्रोधेन पूजिता देवी विदिक्षु परिरक्षतु ॥ ३८ ॥

अस्यार्थः ॥ कामः " कः " शिवः " हः " भगः " एः " लक्ष्मीः " ईः " इंद्रः " लः " शिवनितंबिनी " ह्रीं " ॥ शिवः " हः " शक्रः " लः " भगः " एः " लक्ष्मीः " ईः " इंद्रः " लः " शिवनितंबिनी " ह्रीं " ॥ जीवः " सः " स्मरः "कः" भगः " एः " लक्ष्मीः " ईः " इंद्रः " लः " शिवनितंबिनी " ह्रीं " ॥ ३८ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ प्राणो जीवः स्मरः शक्रः शिवपत्नी शिवः सकौ ॥ शिवः

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

शंभुः सहस्राक्षः शिवपत्नी सकौ लह्रीं ॥ महाज्ञानमयी प्रोक्ता षोडशी सर्वसिद्धिदा ॥ ३९ ॥ " हसकलह्रीं हसकहहलह्रीं सकलह्रीं "। महाज्ञानमयी विद्या षोडशी मां सदावतु ॥ ३९ ॥

अस्यार्थः ॥ प्राणः " हः " जीवः " सः " स्मरः " कः " शक्रः " लः " शिवपत्नी " ह्रीं " शिवः " हः " सकौ " सः " " कः " शिवः " हः " शंभुः " हः " सहस्राक्षः " लः " शिवपत्नी "ह्रीं" ॥ सकौ " सः कः " " लह्रीं"—लकारह्रींकारौ ॥३९॥

मंत्रोद्धारः ॥ हरिप्रिया महामाया कामवाक्शक्तिबीजकम् ॥ तारं माया रमाबीजं वाग्भवं चित्तजन्मनः ॥ विद्यायाः स्वद्वितीयं च तृतीयं शक्तिसंज्ञकम् ॥ शक्तिवाक्कामबीजानि महामाया हरिप्रिया ॥ बीजरूपा षोडशीयं सर्वसंपत्तिदा परा ॥ ४० ॥ केवलबीजरूपा ॥ " श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं "। सर्वांगं मे सदा पातु बीजरूपा च षोडशी ॥४०॥

कूटत्रयसहिता मतांतरे ॥ श्रींह्रींक्लींऐंसौः ॐ ह्रींश्रींकएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रींसौः ऐंक्लींह्रींश्रीं। सर्वांगं मे सदा पातु बीजरूपा च षोडशी ॥ ४० ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अस्यार्थः ॥ हरिप्रिया " श्रीं " महामाया " ह्रीं " कामः " क्लीं " वाक् " ऐं "
शक्तिबीजं " सौः " । बीजं सर्वत्र विशेषणं । तारं " ॐ " माया " ह्रीं" रमा "श्रीं" ।
बीजं सर्वत्रान्वयः । वाग्भवबीजं " ऐं " । चित्तजन्मनः विद्यायाः स्वकामराजविद्यायाः प्रथ-
मकूटमिति । द्वितीयं कामराजबीजं द्वितीयं कूटमिति । तृतीयं शक्तिबीजं शक्तिकूटमिति
केचिन्मते । अन्येषां मते तु कूटसंयुतं चित्तजन्मनः विद्यायाः कामराजविद्यायाः कूटत्र-
यमिति भावः ॥ ४० ॥

मंत्रोद्धारः ॥ प्रणवः कामराजश्च महामाया हरिप्रिया । बाला विद्या काम-
राजः पंचाधिकदशाक्षरी ॥ युवती वागंकुशाख्यं काली कामकला तथा ।
कूर्चबीजमियं प्रोक्ता श्रीमहाषोडशी परा ॥ ज्ञानेन मृत्युशमनी महादेवेन
पूजिता ॥ ४१ ॥ " ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सक-
लह्रीं स्त्रीं ऐं क्रों क्रीं ईं हुं " महादेवी ॥ श्रीमहाषोडशी पूर्णा प्रथिता भुवनत्र-
ये ॥ ज्ञानेन मृत्युशमनी शिरस्स्था सर्वतोऽवतु ॥ श्रीमहाषोडशी पूर्णा महादेवेन
पूजिता । यस्या विज्ञानमात्रेण मृत्योर्मृत्युर्भवेत्स्वयम् ॥ ४१ ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

अस्यार्थः ॥ प्रणवः " ॐ " कामराजः " क्लीं " महामाया " ह्रीं " हरिप्रिया "श्रीं" बालाविद्या " ऐं क्लीं सौः " कामराजपंचाधिकदशाक्षरी " कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं युवतिः " स्त्रीं " वाक् " ऐं " अंकुशाख्यं " क्रों " काली " क्रीं " कामकला " ईं " कूर्चः " हूं " ॥ ४१ ॥

मंत्रोद्धारः ॥ वाग्बीजं कामराजाख्यं पंचदश्याः समुद्धरेत् । वाक्कूटं कामबीजं च द्वितीयं कूटमुद्धरेत् ॥ कामराजाख्यविद्यायाः बालाबीजं तृतीयकम् । तृतीयं कामराजाख्यविद्यायाः कूटमुद्धरेत् ॥ परमात्ममनुं चैव प्रासादमजपामनुम् । महामाया कामराजः पंचदश्यास्तृतीयकं ॥ बाला बीजं तृतीयं तु पुनर्देयं वरानने । पंचदश्या द्वितीयं तु कूटं बाला द्वितीयकम् ॥ बीजं कामस्य कथितं पंचदश्यास्तु वाग्भवम् । प्रथमं कूटमुद्धृत्य बालावाग्भवमेव च ॥ अष्टादशाक्षरी विद्या परब्रह्मस्वरूपिणी ॥ ४२ ॥ " ऐंकएईलह्रीं क्लींहसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं सोहंहौं हंसः ह्रीं सकलह्रीं सौः हसकहलह्रीं क्लीं कएईलह्रीं ऐं " ब्रह्मस्वरूपिणी । अष्टादशाक्षरीविद्या परमानंदचिद्घना । नेत्रवेदात्मकैर्वर्णैर्युता मां सर्वतोऽवतु ॥ ४२ ॥

अस्यार्थः ॥ वाग्बीजं "ऐं" । कामराजाख्यं पंचदश्याः वाक्कूटं "कएईलह्रीं" इति समुद्धरेत् । कामबीजं बालाविद्यायाः द्वितीयं बीजं " क्लीं " । कामराजाख्यपंचदशीविद्यायाः द्वितीयं कूटं " हसकहलह्रीं " इति समुद्धरेत् । बालाविद्यायाः तृतीयं " सौः " । कामराजाख्यविद्यायाः तृतीयं कूटं " सकलह्रीं " इति समुद्धरेत् । परमात्मा मनुः " सोहं " इति परमात्ममंत्रं उद्धरेत् । प्रासादं " हौं " इति प्रासादमंत्रं समुद्धरेत् । अजपामनुं " हंसः " इत्यजपामंत्रमुद्धरेत् । महामाया " ह्रीं " इति समुद्धरेत् । कामराजाख्यविद्यायाः तृतीयं कूटं " सकलह्रीं " । बाला तृतीयं बीजं " सौः" । कामस्य पंचदश्यास्तु द्वितीयं कूटं " हसकहलह्रीं " । बाला द्वितीयं बीजं " क्लीं " । कामस्य पंचदश्याः प्रथमं वाग्भवं कूटं "कएईलह्रीं " इति उद्धृत्य बालाविद्यायाः बीजत्रयाणां तथा कामराजाख्यपंचदशीविद्यायाः त्रिकूटानामादावंते अनुलोमविलोमेन उच्चारणादेषां द्वादशानां द्वादशाक्षराण्यभिमतानि मध्ये पठितानां परमात्ममन्वादिमहामायांतानां चतुर्णां मध्ये महामायाप्रसादबीजौ अधिकाक्षरेण स्वीकृतौ अवशिष्टयोः परमात्मअजपामन्वोः प्रत्येकं द्वे द्वे अक्षरे संख्यायां गृहीते । एवं मिलित्वा अस्य मंत्रस्य अष्टदशाक्षराणि सिद्धानि । अतएव उमामहेश्वराभ्यामष्टदशाक्षरीविद्या-सदा मां परिरक्षतु इत्युक्तं ॥ उद्धारकृता मंत्रवर्णगणनात् द्विचत्वारिंशत्संख्या कथिता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF
CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सा चेत्थं ॥ सबालायाः कामराजोपासितपंचदश्याः षट्त्रिंशदक्षराणि परमात्मा अजपामन्वोः द्वे द्वे अक्षरे महामायाप्रासादबीजौ एकैकाक्षरात्मकौ एवं मिलित्वा द्विचत्वारिंशत् ॥ अतएव नेत्रवेदात्मकैर्वर्णैर्युता मां सर्वतोऽवतु इत्युक्तं ॥ इत्थमुद्धाराशयेन मद्बुद्ध्या निरूपितं तं सुधियो विभावयंतु ॥ ४२ ॥

इति ते कथितं देवि ब्रह्मविद्याकलेवरम् । त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं ब्रह्मरूपकम् ॥ सप्तकोटिमहाविद्यास्तंत्रेषु कथिताः प्रिये । तासां सारात्सारतरा याश्च विद्याः सुगोपिताः ॥ बहुनात्र किमुक्तेन श्रीमहाषोडशी परा । प्रकाशिता मया देवि यां पृच्छसि पुनः पुनः ॥ महाविद्यामयं ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम् । गुरुमभ्यर्च्य विधिवत्कवचं प्रपठेत्ततः । देवीमभ्यर्च्य विधिवत्पुरश्चर्यां समाचरेत् । अष्टोत्तरशतं जप्त्वा दशांशं हवनादिकम् ॥ ततः सुसिद्धकवचः पुण्यात्मा मदनोपमः । मंत्रसिद्धिर्भवेत्तस्य पुरश्चर्यांविना ततः ॥ वक्त्रे तस्य वसेद्वाणी कमला निश्चला गृहे । पुष्पांजल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत्सकृत् ॥ दशवर्षसहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात् । आत्मानं तन्मयं कृत्वा यः पठेत्कवचं पर यं यं पश्यति वै शीघ्रं तस्य दासो भवेद्ध्रुवम् ॥ विलिख्य भूर्जे घुटिकां

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

स्थां धारयेद्यदि । कंठे वा यदि वा बाहौ स कुर्याद्दासवज्जगत् ॥ त्रिलोकीं
क्षोभयत्येव त्रैलोक्यविजयी भवेत् । तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि महास्त्रादीनि
पार्वति । माल्यानि कुसुमानीव सुखदानि भवंति हि ॥ इदं कवचमज्ञात्वा यो
जपेत्सुंदरीं पराम् । नवलक्षं प्रजप्त्वापि तस्य विद्या न सिध्यति ॥ स शस्त्रघा-
तमाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् । इदमेव परं यस्माद्भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पठनीयं मुमुक्षुभिः ॥ भूवेश्मगत्रिवृतषोडशनागशक्रदिग्युग्म-
वस्वनलकोणगबिंदुमध्ये । सिंहासनोपरिगतारकपीठमध्ये प्रोत्फुल्लपद्मनिलयां
त्रिपुरां भजेऽहम् ॥

इति रुद्रयामले गौरीश्वरसंवादे श्रीराजराजेश्वरीश्रीमहात्रिपुरसुंदर्यास्त्रैलो-
क्यमोहनाख्यकवचं समाप्तम् ॥

॥ अस्य कवचस्य तूत्कीलनं ॥ " ॐ हसकलह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं सकलह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं
श्रीं श्रीं क्रीं क्रीं क्रीं " रुद्रसूच्यग्रेण मूलविद्याशापं उत्कीलयोत्कीलय स्वाहा ॥ इति ॥

इदं त्रैलोक्यमोहनकवचं रा. रा. दामोदरराव लघाटे इत्येतैर्दत्तमस्ति ।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

त्रिपुरसुंदरीस्तोत्रम् ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ कदंबवनचारिणीं मुनिकदंबकादंबिनीं नितंबजितभूधरां सुरनितंबिनीसेविताम् । नवांबुरुहलोचनामभिनवांबुदश्यामलां त्रिलोचनकुटुंबिनीं त्रिपुरसुंदरीमाश्रये ॥ १ ॥ कदंबवनवासिनीं कनकवल्लकीधारिणीं महार्हमणिहारिणीं मुखसमुल्लसद्वारुणीम् । दयाविभवकारिणीं विशदलोचनीं चारिणीं त्रिलोचनकुटुंबिनीं त्रिपुरसुंदरीमाश्रये ॥ २ ॥ कदंबवनशालया कुचभरोल्लसन्मालया कुचोपमितशैलया गुरुकृपालसद्वेलया । मदारुणकपोलया मधुरगीतवाचालया कयापि घननीलया कवचिता वयं लीलया ॥ ३ ॥ कदंबवनमध्यगां कनकमंडलोपस्थितां षडंबुरुहवासिनीं सततसिद्धसौदामिनीम् । विडंबितजपारुचिं विकचचंद्रचूडामणिं त्रिलोचनकुटुंबिनीं त्रिपुरसुंदरीमाश्रये ॥ ४ ॥ कुचांचितविपंचिकां कुटिलकुंतलालंकृतां कुशेशयनिवासिनीं कुटिलचित्तविद्वेषिणीम् । मदारुणविलोचनां मनसिजारिसंमोहिनीं मतंगमुनिकन्यकां मधुरभाषिणीमाश्रये ॥ ५ ॥ स्मरेत्प्रथमपुष्पिणीं रुधिरबिंदुनीलांबरां गृहीतमधुपात्रिकां

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

मधुविघूर्णनेत्रांचलाम् । घनस्तनभरोन्नतां गलितचूलिकां श्यामला त्रिलोचन-कुटुंबिनीं त्रिपुरसुंदरीमाश्रये ॥ ६ ॥ सकुंकुमविलेपनामलकचुंबिकस्तूरिकां समंदहसितेक्षणां सशरचापपाशांकुशाम् । अशेषजनमोहिनीमरुणमाल्यभूषांबरां जपाकुसुमभासुरां जपविधौ स्मराम्यंबिकाम् ॥ ७ ॥ पुरंदरपुरंध्रिकाचिकुरबंध-सैरंध्रिकां पितामहपतिव्रतां पटुपटीरचर्चारताम् । मुकुंदरमणीं मणीलसदलं-क्रियाकारिणीं भजामि भुवनांबिकां सुरवधूटिकाचेटिकाम् ॥ ८ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छंकराचार्यविरचितं त्रिपुरसुंदरीस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

...प्रतिनिधियों के समक्ष
...कनाडा के ...मन्त्री श्री सेण्ट लारेंट न
...काश्मीर में राष्ट्र मंडलीय सेनाएं नियुक्त
...रन के प्रस्ताव पर प्रकाश डालते हुए
...हा कि हम इस सम्मेलन में हस्तक्षेप करते
... प्रतीत होना नहीं चाहते थे। हमने
... जानना चाहा था कि क्या ऐसी कार्य-
...ी सहायक सिद्ध होगी। प्र. ट्र.—रा.

...न में जुलूस व सभा पर से प्रतिबन्ध हटा

सलेम १८ जनवरी। बुनकरों द्वारा ...लन आरम्भ करने के पश्चात सलेम ...तथा उपनगर में जुलूस निकालने तथा ...निक सभा आदि करने पर जो प्रति-...गाया गया था, वह कल यहां के ...यों के प्रतिनिधियों के इस आश्वा-... उठा लिया गया कि अब किसी प्रकार ...दोलन नहीं किया जायगा। स्मरण ...गत ९ जनवरी को बुनकरों द्वारा ... आरम्भ किया गया था। इसमें ...त गिरफ्तार किये गये थे। गिर-... गये व्यक्तियों में २७ स्त्रियां भी ... हैं। इस सम्बन्ध में कहा जाता है ... कमी के कारण बुनाई करने वाले ...न्द कर दिये गये। इस प्रकार की ... बुनकर बेकार हो गये और ...न्दोलन आरम्भ किया गया।

स्वतन्त्रता-दिवस पर विशेषांक निकाल सकेंगे

...ल्ली १७ जनवरी। उद्योग ...भाग की एक विज्ञप्ति में ... कि भारत सरकार ...जनवरी को स्वतन्त्रता दिवस

...ाा। के ११।-,
...म २१.
... ४९,
... एलेन
...तापारा
...०॥।=.

...र

१३)
१३)
१७=)
...१४
...०१।-)
...१॥।≡)॥
१८॥)॥
१२॥।=.

...ब्रा ८।=,
...डि २॥।-,
... ४=, वैकु-
...=.

...गलोर ऊलेन
...घम प्रिफरेंस
...वेतोर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF
CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कार्यान्वित नहीं करते तो हम मजबूर होकर कानूनी कार्यवाहियां करनी पड़ेंगी।

आपने कहा कि मालिकों को श्रमिकों की हाल की चुप्पी से बहक नहीं जाना चाहिए क्योंकि यह स्थायी शांति नहीं है। श्रमिकों में आज भी गम्भीर असन्तोष फैला हुआ है और यदि उन्हें सन्तुष्ट करने सबंधी प्रयास नहीं किये गये तो इसका परिणाम खान के मालिकों के लिए बड़ा भयंकर साबित हो सकता है।

सामान्यतया मालिक मजदूर के बीच सुन्दर सम्बन्ध स्थापित रहने से दोनों की भलाई ही होती है इस तथ्यको अब मालिक जितनी जल्दी समझ ले उतना ही अच्छा।

शक्कर उद्योग के श्रमिकों से हड़ताल न करने की सरकारी अपील

लखनऊ, १८ जनवरी। कल एक प्रेस नोट द्वारा उत्तरप्रदेश की सरकार ने शक्कर उद्योग के श्रमिकों से अपील की कि वे इस समय हड़ताल करने की भावना का त्याग कर दें।

प्रेस नोट में सरकार ने श्रमिकों को आश्वासन दिया है कि मजदूरों के १९४९-५० वर्ष की बोनस की मांग सरकार ने निर्णयार्थ भेज दी है।

सरकार ने यह भी चेतावनी दी कि शक्कर का उद्योग राज्य का एक मात्र प्रमुख उद्योग है; इसपर अवांछनीय दबाव नहीं डाला जाना चाहिये। अन्य राज्यों के शक्कर उद्योग के मुकाबले यदि हमारे राज्य के शक्कर उद्योग पर अनोचित दबाव डालने

विचार है कि संयुक्त राष्ट्र संघ की असेम्बली में काश्मीर सम्बन्धी विचार-विनिमय के समय भारत की तर्कहीन प्रदर्शित करके राजनीतिक वातावरण से लाभ उठाने का लियाकत ने यह प्रयत्न किया है अथवा उन्होंने पाकिस्तान की जनता पर यह भाव व्यक्त करने का प्रयत्न किया है कि अधिकांश प्रधान मन्त्री पाकिस्तान के पक्ष में हैं और वार्ता में पाकिस्तान की विजय हुई है।

प्रधान मन्त्रियों के निकटस्थ तटस्थ सूत्रों ने कल बताया कि वार्ता में कोई भी प्रस्ताव वस्तुतः परीक्षण की अवस्था तक नहीं पहुंच पाये। प्रथम दिन परिस्थिति का दोनों दलों ने स्पष्टीकरण किया था और दूसरे दिन श्री मेंजीज ने गतिरोध को भंग करने के उपाय के रूप में राष्ट्रमण्डलीय विशेषतया न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया की सेनाएं काश्मीर में नियुक्त करने का प्रस्ताव किया था। इस प्रस्ताव के प्रति भारतीय प्रतिक्रिया यह हुई कि भारतीय जनमत किसी विदेशी सेना को भारतीय भूमि पर आने देना सहन नहीं करेगा। इसके अतिरिक्त, ऐसी कार्यवाही से विश्व के वर्तमान तनाव के वातावरण में काश्मीर जैसे सैनिक महत्व के स्थान में विदेशी सेना की नियुक्ति का अर्थ वहां पश्चिमी सैनिक अड्डे की स्थापना [illegible] सकता है। इस आपत्ति को [illegible] समर्थन मिलने [illegible] हुए प्रधान मन्त्रियों ने प्रस्ताव [illegible] काफी नीचे उ[illegible] विचार करना नहीं चाहा। [illegible] विशेष जो[illegible] [illegible] वातावरण [illegible] [illegible] पाकि-

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection. Sringeri